इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना उत्तरांचल महिला एवं बाल विकास सोसायटी द्वारा वित्तपोशित परियोजना है, जिसका प्रमुख उद्देष्य महिलाओं के कार्यबोझ को कम कर महिला सषक्तिकरण को बढ़ावा देना है. महिला सषक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग, उत्तराखण्ड सरकार के सहयोग से मोटिवेषनल इन्स्टीट्यूट फॉर ट्रेनिंग एण्ड रिइन्फोर्समेन्ट (मित्र) संस्था द्वारा जनपद अल्मोड़ा केक विकास खण्ड लमगड़ा से परियोजनान्तर्गत महिला सषक्तिकरण का प्रयास किया जा रहा है. जिसके तहत महिलाओं की निर्णय प्रक्रिया भागेदारी सुनिष्चित करना एवं महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्रियाकलापों में प्रभावी भूमिका में लाने का कार्य किया जा रहा है. इन सभी प्रयासों के तहत महिला कार्यबोझ में कमी करते हूए समग्र विकास सुनिष्चित करने का प्रयास निरन्तर जारी है.

परियोजना के उद्देष्य

1. ग्रामीण महिलाओं विषेशकर अनुसूचित जाति व गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली महिलाओं का कार्यबोझ कम करते हुए आय सृजन कार्यक्रमों से जोड़ना.
2. विभिन्न प्रषिक्षणों के माध्यम से महिलाओं की क्षमताओं का विकास करना.
3. महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बन की दिषा में अग्रसर करते हुए उनके कौषल विकास हेतु समूह या सामूहिक रुचियों के अनुरुप व्यवसाय चयन कर समूह गठन, जागरुकता षिविरों का आयोजन, प्रषिक्षणों एवं षैक्षिक भ्रमणों का आयोजन करना.
4. समूहों द्वारा उत्पादित उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु कौषल प्रषिक्षणों का आयोजना करना तथा बाजार की व्यवस्था हेतु समूहों को सहयोग करना.

स्वयं सहायता समूह ओरियेन्टषन कार्यषाला

परियोजना के तहत द्वितीय किस्त के सापेक्ष संस्था द्वारा स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों हेतु 02 दिवसीय दो आरियेन्टेषन कार्यषालाओं का आयोजन काण्डे व तोली में दिनांक 10–11 दिसम्बर 2006 व 11–12 मई 2007 को किया गया. कार्यषाला में स्वयं सहायता समूहों की कुल 69 महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया.

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना के तहत 'मित्र' संस्था द्वारा प्रथम वर्श में अधिग्रहित किये गये स्वयं सहायता समूहों हेतु 05 अभिमुखीकरण प्रषिक्षण का आयोजन पूर्व में किया गया था. द्वितीय चरण में निम्नानुसार दो कार्यषालाओं का आयोजना किया गया, जिसमें स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों के साथ–साथ अन्य ग्रामीणों द्वारा भी प्रतिभाग किया गया. प्रषिक्षण कार्यक्रम में संस्था प्रमुख श्री सुरेष अधिकारी, सन्दर्भ व्यक्ति श्री कमलेष जोषी, श्री बी.एस. बगड्वाल, समन्वयक, एफ.डी.आर.ए., सुगमकर्ता कु. प्रेमा बर्गली, तथा श्री खीम सिंह द्वारा स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को प्रषिक्षित किया गया.

जैविक खाद

उत्तरांचल हिमालय की गोद में बसा एक छोटा सा सुन्दर राज्य है। इसकी सुन्दरता को बनाये रखने के लिए पर्यावरण का संरक्षण किया जाना अति आवष्यक है। जैविक ग्रामों में परियोजना द्वारा कृशकों को जैविक खेती का प्रषिक्षण दिलाया जाता है। विभिन्न जैविक विधियों (जिनसे जैविक खाद बनाई जाती है) का प्रदर्षन कराया जा रहा है तथा विभिन्न फसलों का प्रदर्षन जैविक विधि से किया जा रहा है।

जैविक खेती क्या है?

कृशि की वह पद्धति है जिसमें पर्यावरण को स्वच्छ व प्राकृतिक (पर्यावरणीय) संतुलन कायम रखते हुए भूमि की सजीवता, जल की गुणवत्ता, जैव विविधता आदि को बनाये रखते हुए पर्यावरण एवं वायु को प्रदूशित किये बिना दीर्घकालीन व स्थिर उत्पादन प्राप्त किया जाता है।

रासायनिक उर्वरकों का विकल्प/प्रतिस्थानी

रासायनिक उर्वराकों के प्रयोग होने से हमें प्रारम्भ में उत्पादन तो अधिक मिला परन्तु इसी के साथ इसके दुश्परिणाम जैसे कीड़े/बीमारी का अधिक प्रकोप, कृशि उत्पादों की गुणवत्ता में कमी आदि के साथ ही मृदा की उर्वरा षक्ति में लगातार ह्य हो रहा था। हमारी रासायनिक खादों पर निर्भरता बहुत ज्यादा बढ़ गयी थी। इसक कम करने एवं जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए हमें जैतिक अवषेशों को कम समय में सड़ाकर उत्तम प्रकार की जैविक खाद बनाने की विधियों पर ध्यान के केन्द्रित करना होगा। इस प्रकार की उत्तम तकनीकों की जानकारी का अभाव था। इसी को ध्यान में रखकर सर्वोत्तम जैविक तकनीकों का विस्तृत विवरण नीचे दिया जा रहा है।

(प) 1 से 6 माह में तैयार होन वाली जैविक खादें

1. नाडेप

(प) पक्का नाडेप	(7) भ ू– नाडेप/कच्चा नाडेप
(पप) टटिया नाडेप	(8) काउपेट पिट (सी.पी.पी.)
(अ)बी0डी0 प्रेपरेषन 502–507	(9) जैव कल्चर
(पअ)फास्पो कम्पोस्ट नाडेप	(10) गोबर खाद

(पप) षीघ्र तैयार होने वाली जैविक खादें

2	बायो गैस स्लरी	1	अमृत पानी
3	वर्मी कम्पोस्ट	2	अमृत संजीवनी
4	नील हरित षैवाल	3	मटका खाद
5	हरी खाद	4	वर्मी वाष
6	सींग खाद	5	तरल खाद
	(प) गाय की सींग खाद	6	अग्निहोत्र भस्म
	(पप) सींग सिल्का		

जैविक खेती में अनेक पद्धतियां सक्रिय रुप से संसार में कार्य कर रही हैं। बायोग्राम के क्षेत्र में भारत की सफल पद्धतियों को प्राथमिकता दी जा रही है। ये पद्धतियां हैं–

1– नाडप विधि से कम्पोस्ट बनाना।

2– सी0 पी0 पी0

3– वर्मी कम्पोस्ट

इन सभी कार्यक्रमों का विवरण निम्न है।

नाडप विधि से कम्पोस्ट बनाना

नैडप कम्पोस्ट विधि के लिए ईंटों का ढांचां भूमि की समतल सतह पर बनाया जाता है। इसका आकार 3.3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा तथा 1 मीटर ऊँचा होता है। इसकी दीवारें 22.5 सेमी0 मोटी होती है। ढांचे की लम्बाई आवश्यकतानुसार थोड़ी बहुत बढ़ाई जा सकती है। वह ईंटों का बनाया जाता है। इसको सीमेन्ट या चूने से इस प्रकार जोड़ा जाता है कि ढांचे में वायु संचार हेतु पर्याप्त छेद हों। ईंटों की पहली तथा अन्तिम दो पंक्तियों में किसी प्रकार का कोई छेद नहीं होता है। इस प्रकार तैयार किया गया ढांचा अत्यन्त टिकाऊ होता है तथा इसे कई वर्षों तक प्रयोग में लाया जा सकता है।

ढांचा तैयार होने के उपराल्त इसकी सतह एवं अंदर की दीवारों को गाय के गोबर एवं मिट्टी के मिश्रण से लीपा जाता है। इस विधि में गाय के गोबर को ही उपयोग करने की सलाह दी जाती है, जिसकी मात्रा अन्य विधियों से तैयार की गई कम्पोस्ट की तुलना में बहुत कम होती है। गोबर

के अलावा इसमें खेतों एवं उद्यानों को कचरा, जो कि सड़–गल सके तथा मिट्टी एवं पानी की भी अवश्यकता होती है। इस विधि द्वारा कम्पोस्ट 90 से 110 दिन में जमकर तैयार हो जाती है तथा उसमें 0.75 से 1.75 प्रतिशत तक नत्रजन, 0.7 से 0.9 प्रतिशत फॉस्फोरस तथा 1.2 से 1.4 प्रतिशत पोटाश होता है। वर्तमान में किए गए प्रयोगों से सिद्ध हो गया है कि इस विधि द्वारा बनाए जाने वाले कम्पोस्ट में नत्रजन, फॉस्फोरस तथा पोटाश की मात्रा बढ़ाई जा सकती है, साथ ही इसमें सूक्ष्म जीवाणुओं का भी प्रवेश कराया जा सकता है।

इस विधि द्वारा तैयार किए जाने वाले कम्पोस्ट में विभिन्न वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है, जैसे–खेतों का कचरा, जिसमें कि फसलों के डंठल, पत्ती, छाल, जड़ आदि सम्मिलित हैं, 1400 से 1500 कि0ग्रा0 सूखी छनी मिट्टी, 1750 से 1800 कि0ग्रा0, पानी 1500–2000 लीटर मौसम के अनुसार।

ढांचे को भरने से पहले आवश्यक है कि गाय के गोबर का पानी में बनाया गया मिश्रण टांके की अधो सतह एवं अंदरुनी दीवारों पर अच्छी तरह छिड़क दिया जाये, तत्पश्चात् 200–210 कि0ग्रा0 कचरे की 15 से 20 सेमी. की एक तह लगा दी जाये।

दूसरी तह में 4–5 कि0ग्रा0 गाय के गोबर या बायोगैस स्लरी को 125–150 लीटर पानी में घोलकर प्रथम तह पर छिड़क दिया जाये। तीसरी तह में सूखी मिट्टी जिसमें कि सड़–गल न सकने वाले पदार्थ न हों, जैसे–कांच, पत्थर, प्लास्टिक आदि की एक सतह लगा दी जाये, जिसमें 200–225 कि0ग्रा0 मिट्टी की आवष्यकता होगी। मिट्टी की सतह से ऊपर समुचित मात्रा में पानी का छिड़काव कर दिया जाये। इस प्रकार यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाये जब तक कि टांका पूरा भर न जाये। अनुमानतः 6–7 बार यह प्रक्रिया दोहराने पर टांका भर जायेगा। टांके को भरते समय ध्यान रखना पड़ेगा कि भराई सतह से 35–50 से.मी. ऊपर तक हो। इस प्रकार टांके को भरने के पष्चात्, इसे ऊपर से 6–8 से.मी. मोटी मिट्टी एवं गाय के गोबर से लिपाई कर टांके की छत को इस प्रकार रखा जाये, जिससे कि ऊपर से पानी बहकर इस टांके में न जा सके। सम्पूर्ण प्रक्रिया हो जाने के पष्चात् टांके के ऊपर का हिस्सा किसी झोपड़ी के ऊपरी सिरे के समान प्रतीत होगा।

प्रायः यह समझा जाता है कि इस टांके को भरने में 2–3 दिन का समय लगता है क्योंकि सभी सामान इकट्ठा करना एक दिन में संभव नहीं है। अतः उपयुक्त होगा कि गाय के गोबर आदि को किसी छायादार स्थान में 8–10 दिन तक रखा जाये और जब सभी वस्तुएँ एकत्रित हो जाएं तो एक ही दिन में पूरे टांके को भरकर बंद कर देना उपयुक्त होगा। करीब 45 दिन पष्चात् भरा हुआ टांका नीचे दबना प्रारंभ हो जाएगा और अनुमानतः 25–30 से.मी. तक दब जाएगा। साथ ही ऊपर की छत पर

दरारें दिखने लगेंगी। ऐसी अवस्था में इसे उपरोक्त बताई गई विधि से दुबारा भरकर मिट्टी–गोबर के मिश्रण से उसी प्रकार लीप दिया जाये, जैसा कि प्रथम बार किया गया था।

अच्छी कम्पोस्ट तैयार करने के लिए जरुरी है कि टांके में उपयुक्त नमी उपलब्ध रहे। अतः दुबाररा भरते समय गोबर के घोल को अच्छी प्रकार पानी में मिलाकर टांके में छिड़क दिया जाये। इस प्रकार 90–110 दिन में अच्छी कम्पोस्ट बनकर तैयार हो जाती है। अनुमान है कि एक टांके से लगभग साढ़े तीन टन कम्पोस्ट प्राप्त होती है, जिसमें से कुछ आधी पकी हो सकती है, जिसे कि प्रयोग में लाने से पहले अलग कर देना बेहतर होता है।

कम्पोस्ट की गुणवत्ता बढ़ाना

उपरोक्त विधि से बनायी जाने वाली कम्पोस्ट की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु यह उचित होगा कि तह बिछाते समय एक हल्की तह रॉ–फॉस्फेट या सिंगल सुपर फॉस्फेट या रॉ–फॉस्फेट एक टांके के लिए पर्याप्त होगी। टांके को भरने के लगभग 75–80 दिन पष्चात् टांके की छत पर बांस की सहायता से नीचे की सतह तक जगह–जगह छिद्र कर दिए जाएं। इन छिद्रों में 500 ग्राम पी.स.बी., 500 ग्राम एजेक्टोबैक्टर, 500 ग्राम राइजोबियम, 23 लीटर पानी में घोलकर इन छिद्रों में डाल दिया जाये। तत्पष्चात् इन छिद्रों को दुबारा लीपकर बंद कर दिया जाये। इससे कम्पोस्ट की गुणवत्ता भी बढ़ेगी तथा इसके बनने की प्रक्रिया में तीव्रता आएगी।

जैसा कि ऊपर बताया गया है कि एक टैंक में तीन से साढ़े तीन टन तक पकी कम्पोस्ट प्राप्त हो सकती है, जिसमें 0.5 टन कच्ची कम्पोस्ट प्राप्त होने का अनुमान होता है। टांके की बनवाई में 3500–4000 रुपये का व्यय आता है। यह अनुमान लगाया गया है कि 20–25 टैंक बनाकर एक उद्यमी अपना व्यापार लाभप्रद रुप से चला सकता है।

काऊ पैट पिट (सी. पी. पी.)

काऊ पैट पिट क्या है?

गाय के गोबर से एक निश्चित आकार के गड्ढे में बनायी जाने वाली खाद सी. पी. पी. या 'काऊ पैट पिट' कहलाती है।

सामग्री

3 ईंट लम्बाग2 ईंट चौड़ाग4 ईंट ऊँचा = कुल 40 ईंट 40 किलो दूध देने वाली गाय का ताजा गोबर।

250 ग्राम गुड़, अण्डे के छिक्कल का पाउडर व बेसोल्ट पाउटर तथा बोनमिल।

बायोडयनामिक प्रेपरेशन 502 से 507 के 3 पैकेट अर्थात् 18 ग्राम प्रति सी. पी. पी.।

प्रयोग

1– जमीन में डेढ़ फुट स्थान पर एक फुट गहरा गड्ढा कर दें, जिसमें 3 ईंट लम्बा, 2 ईंट चौड़ा कुण्ड बनाया जा सके जो 3 ईंट की परत ऊपर उठेगा।

2– चारों दीवारों के बनने के बाद यह ध्यान दें कि बरसात का बहता पानी कुण्ड में न जाये, अर्थात् कुण्ड स्थान जमीन की सतह से ऊपर हो।

3– दूध देने वाली गाय का 40 किलो गोबर लें, उसमें 20 ग्राम गुड़ व अण्डे के छिक्कल का पाउडर, बोनमिल व बेवोल्ड पाउडर डालकर 5 लीटर पानी से गोबर को मथ लें तथा मथा हुआ गोबर उपरोक्त बनाये कुण्ड में डाल दें,

4– गोबर की ऊपरी सती पर बायोडायनामिक प्रेपषन 502 से 506 छेद की तीन कतार बनाकर डालें।

5– बायोडायनमिक प्रेपरेषन 507 को आधा लीटर पानी में 15 मिनट तक घड़ी की दिषा व विपरीता दिषा में घुमाकर कुण्ड के मध्य भग में ऊपरी सतह पर छिड़क दें।

6– ऊपरी सतह पर दो लम्बी लकड़ियाँ रखकर जूट की बोरी से ढक दें।

7– हर सप्ताह देखें कि सतह पर दरार तो नहीं पड़ रही है, अर्थात् सूख तो नहीं रहा है, ऐसा होने पर 2–3 लीटर पानी ऊपरी सतह पर छिड़क दें तथा प्रत्येक 15 दिन में चार बार उलट पलट कर दें।

8– 2–3 माह में सी.पी.पी. वातावरण अनुसार पूर्णतः तैयार खाद हो जायेगी।

9– खाद तैयार हो जाने पर उपरोक्त खाद को मिट्टी के घड़े में भरकर नमी वाले स्थान में प्रयोग करने तक रख लें।

सी. पी. पी. के लाभ

रासायनिक व कीट नाषकों के प्रयोग से मिट्टी के सूक्ष्म जीवाणु नश्ट हो रहे हैं। इसके प्रयोग से उन्हें पुनः प्राकृतिक रुप से जाग्रत किया जाता है व सुक्ष्म जीवाणु की संख्या बढ़ती है।

प्रयोग

1– गमलों, फूलों, फलों, साग–सब्जी में इसके प्रयोग के तुरंत लाभ प्राप्त होते हैं।

2– 5 किलो मिट्टी सी.पी.पी. 20 लीटर पनी में रात भर भिगोकर, अगले दिन प्रातः काल 15 मिनट तक घड़ी की दिषा व विपरीत दिषा में घुमाकर अतिरिक्त 50 लीटर पानी मिलाकर, उपरोक्त सामग्री कपड़े से छानकर एक एकड़ खेत में छिड़काव करें।

3– छिड़काव एक फसल में न्यूनतम 2 बार करें। प्रथम दो पत्ती अवस्था अर्थात् रोपाई में करें, दूसरा फल–फूल आने की अवस्था में।

4– सी.पी.पी. का प्रयोग करते समय खेत में पर्याप्त नमी हो तथा प्रातः या सायं काल को प्रयोग किया जाये।

5– सी.पी.पी. का प्रयोग दी पोस्ट–ग्राफ्टिंग–रुटिंग–रुपाई–बीज षोधन आदि अवस्था में लाभदायक रहता है।

काऊ पैट पिट की खाद तैयार होन का समय

गड्ढे में दो से तीन माह में खाद तैयार हो जाती है। अच्छी तैयार खाद में मीठी खुषबू होती है।

वर्मी कल्चर (यानी केंचुओं की खाद)

सरल लाभकारी और निरंतर रहने वाली टिकाऊ खेती और अन्ततः जीवन के लिए कृशि निवेषों की लागत खर्च को कम करना अवष्यक है, क्योंकि उपलब्ध ऊर्जा स्रोत धीर–धीरे कम होते जा रहे हैं। इसलिए वैकल्पिक साधनों का प्रचार–प्रसार तथा उनका प्रयोग अभी से ही प्रारम्भ कर देना जरुरी हो गया है। आज खेती के लिए आवष्यक खाद एवं कीटनाषक रसायनों की बढ़ती खपत ने कई समस्याओं को जन्म दिया है, जैसे पानी का कम होना, प्रदूशण का फैलाना और कूड़ा करकट तथा कचरे की मात्रा में हो रही लगातार वृद्धि आदि।

जमीन में केंचुओं द्वारा निर्मित वर्मी कम्पोस्ट खाद हमारी टिकाऊ खेती की आवष्यकता की पूर्ति करती है। घरों, कारखानों तथा खेतों से कूड़ा–करकट और कचरा निकलता है और यही कचरा धीरे–धीरे सड़कर प्रदूशण फैलाता है या पानी प्रदूशित करता है। इन प्रदूशित रसायनों और कचरे को यदि पुनः निर्माण (रिसायकल) में लिया जाये तो यह वातावरण साफ रखेंगे और ऊर्जा का निर्माण करेंगे। याद रखिए हमारे देष में हर साल बत्तीस हजार करोड़ रुपये का कचरा पड़ा रहता है। केंचुए, देसी मुर्गियाँ, इस कूड़े से क्रमषः कम्पोस्ट के रुप में ऊर्जा और अण्डों के रुप में हमें भोजन देती हैं।

पूसा वर्मीटेक

1– केंचुए के पालन की विधि

1– केंचुए की जाति – एसीनिया फोऐटिडा

2– सामग्री – रेता 10 किलो, पुराना गोबर 5 किलो, ताजा गोबर 10 किलो, जैव अवषेश (कचरा, पत्ते, डंठल), पानी 15 लीटर, मिट्टी अच्छी 1 किलो, ईंट या पुराने पत्थर 100 ईंट या पुराने पत्थर।

3– टैंक की नाम 2.5 फीट लम्बा, 2 फीट ऊँचा व 4 फीट चौड़ा।

4– केंचुए – 1000 (एक हजार)

5– बनाने की विधि

क) सबसे पहले 2–3 सेमी. ऊँची रेत की परत बिछाइये।

ख) उसके बाद पुराने गोबर की लगभग 5–6 सेमी. की परत बिछाइये।

ग) उसके बाद कम से कम 15 सेमी. के जैव अवषेश की परत बिछाइये।

घ) उसके बाद हम इस जैव अवषेश को मिट्‌टी व पुराने गोबर के मिश्रण से 9 सेमी. चौड़ी परत से ढक देंगे।

ड.) 8–10 सेमी. चौड़ी परत पुराने जैव अवषेशों की।

च) उसके बाद हम 1 सेमी. का मिट्‌टी का बिछौना डालेंगे। उसके ऊपर आखिर में 5 सेमीत्र पुराना गोबर डाला जाएगा।

छ) केंचुए के इस टैंक को कम से कम 7 दिन तक हम छोड़ देंगे। इसके बाद पहले दिन के जैव अवषेश के परत में हम केंचुए छोड़ देंगे।

2– अवलोकन

1– केंचुए को टैंक में छोड़ने के लगभग 20 दिन बाद गोल–गोल भुरभुरी मिट्‌टीनुमा काला पदार्थ कुछ मात्राओं में मौजूद है।

2– ध्यान से देखने के बाद पीले रंग के केंचुओं के अण्डे (ककून) दिखेंगे।

3– सड़ने की बदबू के बदले एक सौंधी खुषबु महसूस होती है।

3–एक केंचुआ लगभग 79–90 दिनों मे 100 अण्डे के प्रजनन की क्षमता रखता है। जिनमें अनुकुल वातावरण में लगभग 10–15 केंचुए जी पाते हैं।

4–ऊपर लिखे टैंक साइज में 60–70 दिनों में 15–25 किलो खाद तैयार होती है।

5– खाद निकालने की विधि

1– खाद निकालने के लगभग एक दिन पहले सारी सामग्री को टैंक के एक तरफ एकत्रित करके एक कोने में इकट्‌ठा कर लें।

2– इसके बाद 100–150 मिली. पानी उस पर छिड़क दें।

3– 24 घंटे के दरमियायन सारे केंचुए टैंक की सबसे आखिरी परत में चले जाएँगे।

4– खाद को निकाल लें, अगर खाद में पूरी तरह से सड़ा नहीं है, तो उसे
छान लें।

6– रखरखाव – केंचुए की खाद को हम पुरनने सीमेन्ट के बैग, ठण्डे कमरे में ढेर लगाकर, मटके आदि में रख सकते हैं, अगर कमरे में ठण्डक (30 डिग्री सेलसियस) बनी रहे तो इस खाद को हम दो साल तक स्टोर में रख सकते हैं।

7– उपयोग विधि –

1– केंचुए की खाद को हम तीन से पंच टन प्रति एकड़ के हिसाब से उपयोग कर सकते हैं।

2– उद्यान में एक पौंधे के 5–7 किलो बड़े पेड़ में 7–10 किलो।

जागरुकता सांस्कृतिक कार्यक्रम (कठपुतली कार्यक्रम)

स्वयं सहायता के सदस्यों व अन्य ग्रामीणों को महिला मुद्दों, कार्यबोझ, मुक्ति, सामाजिक मुद्दे इत्यादि विशय पर जागरुक करने हेतु संस्था द्वारा 12 कठपुतली कार्यक्रमों का आयोजन किया गया.

मानव जाति का स्वभाव रहा है कि वह पढ़ने व लिखने की अपेक्षा देखने से अधिक सीखता है, यदि उत्तराखण्ड के ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो आज भी ग्रामीण समाज बहुम कम मात्रा में षिक्षित है, ऐसे में आवष्यक हो जाता है कि परियोजना के क्रियान्वयन हेतु कुछ ऐसे में आवष्यक हो जाता है कि परियोजना के क्रियान्वयन हेतु कुछ ऐसे माध्यमों का चयन किया जाये जिससे परियोजना के उद्देष्यों को आसानी से ग्रामीणों तक पहुंचाया जा सके.

सहयोगी संस्था 'मित्र' का सदैव यह प्रयास रहा है कि किसी भी परियोजना के संदेषों को प्रत्येक ग्रमीण, विषेश महिला वर्ग तक पहुंचाया जाये ताकि महिलायें भी इन परियोजनाओं का वास्तविक लाभ ले सकें और विकास की मुख्य धारा से जुड़ सके. संस्था द्वारा इस हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं जनजागरुकता हेतु 'मित्र लोक कला मंच' का गठन किया गया है. इसके तहत संस्था के कलाकार ग्रामीण व षहरी क्षेत्रों में जाकर नुक्कड़ नाटक, कठपुतली कार्यक्रम एवं प्रेरणा गीतों के माध्यम से समाज के उन लोगों को भी समाज से जोड़ने का प्रयास करते है जा आज भी षिक्षा के अभाव में किसी भी योजना/परियोजना का लाभ नहीं ले पा रहे है.

इन्दिरा महिला विकास समेकित योजना के तहत संस्था द्वारा परियोजना के अन्तर्गत चयनित ग्रामों में जनजागरुकता एवं प्रेरणा हेतु कठपुतली कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों जैसे– जुआ, षराब, दहेज प्रथा, लड़का–लड़की में अन्तर, कन्या भ्रुण हत्या, महिलाओं के अतिरिक्त कार्य बोझ, पर्दा प्रथा, स्त्री अषिक्षा व भ्रश्टाचार जैसे ज्वलन्त मुद्दों को बहुत ही सहज रुप से प्रस्तुत किया गया.

ग्रामीणों से कार्यक्रम के उपरान्त दिखाये गये विशयों पर खुली चर्चा की गयी तथा उनकी प्रतिक्रिया जानी गयी. कार्यक्रम के उपरान्त पाया गया कि ग्रामीण महिलाओं एवं बच्चों पर इस कार्यक्रम का सीधा प्रभाव पाया गया.

परियोजना के तहत निम्नानुसार कठपुतली जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किये गये–

क्रं सं	आयोजन दिनांक	आयोजित स्थान/गांव
1		
2		

3		
4		
5		
6		

आवष्यकतानुसार दीवार लेखन कार्य

परियोजना के तहत परियोजना के प्रचार–प्रसार व जन जागरुकता हेतु संस्था द्वारा अनेक विधियों को अपनाया जा रहा है, जिससे परियोजना के उद्देष्यों व संदेष को अधिक से अधिक गांवों में पहुंचाया जा सके. इसी के तहत संस्था द्वारा दीवार लेखन का कार्य किया गया. परियोजना के प्रथम चरण में अधिकांष दीवार लेखन कार्य लमगड़ा क्षेत्र में किया गया था व द्वितीय चरण में लेखन कार्य जैंती क्षेत्र में किया गया.

महिलाओं का कार्यबोझ कम करने हेतु गतिविधियां

इन्दिरा महिला समेकित विकास योजना का प्रमुख उद्देष्य महिलाओं के अनावष्यक कार्यबोझ को कम करना है, ताकि महिलायें इस प्रकार पढ़ने वाले अनावष्यक कार्यबोझ को कम कर सकें तथा स्वास्थ्य रहकर षरीर पर पड़ने वाले दुश्प्रभावों से बच सकेंत्र सहयोगी संस्था द्वारा गांव के सर्वेक्षण तथा पूर्व अनुभवों के आधार पर पाया कि महिलाओं को घरेलू तथा कृशि कार्यों मे तकनीकी जानकारी तथा समय प्रबन्धन के अभाव में भी अनावष्यक कार्यबोझ का सामना करना पड़ता है.

पहाड़ों की प्रमुख समस्या पानी का संग्रहण है और इससे सबसे ज्यादा महिलायें ही प्रभावित होती है. वनों के अन्धाधुन्ध कटान व वर्शा के अभाव में पानी के प्रकृतिक स्रोत निरन्तर सूखते जा रहे है. जिस कारण महिलाओं का अधिकांष समय पानी के संग्रहण में लग जाता है. घर की दैनिक आवष्यकताओं के साथ–साथ पषुओं के लिए भी पानी की आवष्यकता होती है. इन सभी समस्याओं का निराकरण केवल महिला को ही करना होता है, गर्मी के दिनों में तो स्थिति और अधिक गंभीर हो जाती है. महिलायें पानी की तलाष में 06 से 07 किमी दूर एकत्र कर पानी अपने सर पर रख कर लाती है. इससे एक ओर जहां उन्हें अनावष्यक कार्यबोझ होता है, वहीं समय की भी बर्बादी होती है.

उत्तराखण्ड में पानी का एक प्रमुख स्रोत नौले भी रहे है. परन्तु पेड़ों के कटान, उचित रखरखाव के अभाव में ये भी सूखते जा रहे है. संस्था द्वारा इन्दिरा विकास योजना के तहत कुछ नौलों के रखरखाव हेतु कार्य प्रस्तावित किया गया था, जिससे कुछ नौलों का जीर्णोद्धार हेतु संस्था

द्वारा अल्प मात्रा में धनराशि की मांग की गयी थी, इस हेतु अनेक ग्रामों के नौलों के सर्वेक्षण उपरान्त संस्था द्वारा कनरा व बलिया गांवों के नौलों को जीर्णोद्धार हेतु चयन किया गया. नौलों के जीर्णोद्धार में परियोजना से केवल 70 प्रतिशत धनराशि का प्राविधान किया है, शेष धनराशि लाभार्थियों द्वारा श्रमदान, अंशदन व ग्राम सभा निधि के सहयोग से किया गया. उक्त प्रकार चयनित ग्रामों में समूहों व ग्रामीणों के साथ हुई विभिन्न मिटिंग के उपरान्त समूह के सदस्यों व ग्रामीणों द्वारा इस कार्य हेतु अपना पूर्ण सहयोग व उचित श्रमदान हेतु आश्वस्त किया गया. तदपश्चात संस्था द्वारा यह जीर्णोद्धार का कार्य किया गया. वर्तमान समय में नौलों को एक अच्छा रुप दिया जा चुका है और ग्रामीण इससे अच्छा फायदा उठा रहे है. साथ ही वर्तमान समय में एल.डी.पी.ई. टैंक भी कम लागत में जल संग्रहण के अच्छे उदाहरण के रुप में सामने आ रहा है. एल.डी.पी.ई. निर्माण को बढ़ावा देने हेतु संस्था द्वारा इस परियोजना के तहत भी कुछ टैंक निर्माण प्रस्तावित किये थे. जिसके सापेक्ष संस्था द्वारा निम्नानुसार टैंक निर्मित किये गये.

एल.डी.पी.ई. टैंक प्रदर्शन

संस्था द्वारा परियोजना के तहत द्वितीय किस्त के अन्तर्गत एल.डी.पी.ई. टैंक प्रदर्शन का कार्य किया जाना प्रस्तावित किया था. जिसके सापेक्ष संस्था द्वारा सभी टैंक का निर्माण कार्य पूर्ण किया जा चुका है. टैंक लागत का 30 प्रतिशत अंश लाभार्थी द्वारा स्वयं वहन किया गया. निर्मित टैंकों का विवरण निम्नानुसार है–

क्र सं	नाम
1	धनुली देवी पत्नी श्री सत्यों, मिलन स्वयं सहायता समूह
2	चन्द्रा देवी पत्नी श्री बचीसिंह, लमकोट रुपा स्वयं सहायता समूह
3	तुलसी देवी पत्नी श्री पूरन सिंह, ढैली जयनन्दा स्वयं सहायता समूह
4	हेमा देवी पत्नी श्री मोहनसिंह, बरम ग्रामीण महिला संगठन स्वयं सहायता समूह

पॉलीहाउस प्रदर्शन

परियोजना के तहत बेमौसमी सब्जी उत्पादन हेतु 03 पालीहाउस का प्रदर्शन किया जाना था, इसके तहत लाभार्थियों के चयन उपरान्त निम्न लाभार्थियों द्वारा पालीहाउस का निर्माण किया गया–

क्र सं	नाम
1	चम्पा देवी पत्नी श्री भैरव दत्त, धुरासंगरौली प्रीती स्वयं सहायता समूह
2	चम्पा देवी पत्नी श्री तल्ला लमकोट. एकता स्वयं सहायता समूह
3	सुनीता देवी पत्नी श्री कृष्ण कुमार, चायखान रोशनी स्वयं सहायता समूह

चैपकटर प्रदर्शन

परियोजना के तहत महिला कार्यबोझ कम करने हेतु 05 चैपकटर प्रदर्शन किये जाने थे, परियोजना के तहत निम्न लाभार्थियों को चैपकटर द्वारा लाभान्वित किया गया–

क्र सं	नाम
1	
2	
3	
4	

नाद प्रदर्शन निर्माण

पहाड़ में जानवरों को घास खुले में खिलाये जाने की परम्परा है, जिसमें काफी मात्रा में घास बरबाद हो जाती है तथा महिला का कार्यबोझ बढ़ता रहता है. इसे कम करने हेतु संस्था द्वारा ग्रामीणों को एक स्थान व नाद निर्माण कर उसमें घास खिलावाने हेतु ग्रामीणों को जागरुक किया गया. इसके तहत संस्था द्वारा परियोजना के तहत 02 नाद निर्माण प्रदार्शन प्रस्तावित थे, परियोजना के तहत निम्न लाभार्थियों द्वारा नाद निर्मित किये गये–

क्र सं	नाम
1	
2	
3	

4	

वर्मी कम्पोस्ट प्रदर्शन निर्माण

संस्था द्वारा परियोजना के तहत जैविक खाद को बढ़ावा देने हेतु वर्मी कम्पोस्ट पिटों का निर्माण कार्य किया जा रहा है, जिसके तहत 04 पक्के पिट प्रदर्शित किये जाने थे, जिसके सापेक्ष निम्न लाभार्थियों द्वारा पिट ईट के पक्के ढांचे से बनाये गये है.

क्र सं	नाम
1	
2	
3	
4	
5	
6	

बी.डी.हीप. कम्पोस्ट निर्माण

जैविक खाद के तहत संस्था द्वारा तीन बी.डी.हीप. कम्पोस्ट का निर्माण जैती क्षेत्र में अक्टूबर 2006 में किया गया. यह खाद तैयार होकर खेत में डाली जा चुकी है. वर्तमान समय में अन्य ग्रामीण भी इससे सीख लेकर और बी.डी.हीप. का निर्माण कर रहे हैं.

क्र सं	नाम	पति का नाम	समूह का नाम	गांव का नाम
1				
2				
3				
4				
5				